संगीत विशारद (प्रथम खण्ड)

Sangeet Visharad Part-I (4th Year)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक: १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

शास्त्र (Theory)

(१) **परिभाषा**-प्राचीन तथा अर्वाचीन आलाप गायन पद्धति, जाति गायन, स्वस्थान नियम,अलप्ति गान, राग लक्ष्मण, निबद्ध तथा अनिबद्ध, गान, रागालाप, रूपकालाप, अक्षिप्तिका, विदारी, सन्यास विन्यास, अपन्यास, देसी संगीत, मार्ग संगीत, अलपत्व बहुत्व, सहायक नाद,**Diatonic scale** (डायटोनिक स्केल), **Major Tone** (मेजर टोन), **Semi Tone** (सेमी टोन)।

(२) प्राचीन, मध्य, अर्वाचीन (आधुनिक) कालों में श्रुति-स्वर विभाजन पद्धति का साधारण ज्ञान तथा वीणा पर शुद्ध तथा विकृत स्वर स्थापना।

(३) दक्षिणी तथा उत्तर भारतीय ताल पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

(४) गीतों के प्रकार- ठुमरी तथा टप्पा।

(५) बड़े तथा छोटे ख्याल की स्वर लिपि एवं ध्रुपद तथा धमार की स्वर लिपि विलम्बित दुगुन, तिगुन, चौगुन, और आड़ लयकारी में लिखनें का अभ्यास।

(६) निर्धारित राग समूह में समता-विभिन्नता, अल्पवत्व बहुत्व एवं आविर्भाव तथा तिरोभाव के बारे में पूर्ण ज्ञान।

(७) लिखित स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना।

(८) निर्धारित ताल समूहों के ठेकों को विभिन्न लयकारी में लिखनें का अभ्यास।

(९) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखने का अभ्यास।

(१०) जीवनी तथा इन कलाकारों का संगीत में योगदान- हददु खां, बैजू बावरा, गोपाल नायक, अदारंग सदारंग, उस्ताद बडे गुलाम अली खां।

क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित राग समूहों में छोटा ख्याल जानना आवश्यक है। ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये विभिन्न प्रकार के आलापों सहित पूर्ण ध्रुपद (ठाह दुगुन तिगुन, चौगुन तथा आड़ लयकारी)

निर्धारित राग- पूरिया, हिन्डोल, शंकरा, दरबारी कान्हड़ा अड़ाना, बहार, सोहिनी, जोगिया, मुलतानी, मारवा , तोडी, विभास।

(२) ऊपर दिये गये रागों में से किन्ही छः रागों में बड़े ख्याल जानना आवश्यक है (इन ख्यालों की रचना रूपक, एकताल झुमरा तालों में होना आवश्यक है।) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों का ध्रुपद गान चारताल, सूलताल, तीवरा तथा बसंत (मात्रा ९) में होना आवश्क है।

(३) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों में से किन्ही भी रागों में दो ध्रुपद एक धमार और एक तराना आवश्यक है। (ध्रुपद तथा धमार अवश्य ही विलम्बित दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय में होना चाहिये)। -ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये पूर्व वर्ष के लिये निर्धारित राग समूहों में ध्रुपद के अतिरिक्त विलंबित दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी के सहित दो धमार एक होरी तथा एक तराना जानना आवश्यक है।

(४) ख्याल गायन के परीक्षार्थियों को किसी एक राग में एक ठुमरी का साधारण अभ्यास-पीलू, खमाज और तिलंग।

(५) निर्धारित राग समूहों में समता-विभिन्नता अल्पत्व-बहुत्व अविर्भाव तथा तिरोभाव का प्रदर्शन ।

(६) (क) पूर्व वर्ष के लिये निर्धारित तालों के ठेके ताली-खाली सहित ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ में बोलने का अभ्यास।

(ख) पंचम सवारी, दीपचन्दी, रूपक, जत, गजझंपा तथा मत तालों के ठेकों के बोल बोलनें का अभ्यास।

(७) आलाप सुनकर राग निर्णय।

(८) तानपुरे के साथ गाने का अभ्यास अनिवार्य है

टिप्पणी- पूर्व वर्षों का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।

संगीत विशारद पूर्ण

Sangeet Visharad Final (5thYear)

गायन (VOCAL)

ख्याल एवं ध्रुपद

(प्रथम प्रश्न पत्र-५०, द्वितीय प्रश्न पत्र-५०)

पूर्णांक: ३०० शास्त्र- १००, क्रियात्मक-१२५
मंच प्रदर्शन-७५

शास्त्र (Theory)

प्रथम प्रश्न-पत्र (First paper)

(१) **परिभाषा**- गायकी, नायकी, कलावन्त, वाग्येकार, ध्रुपद की वाणी, स्वस्थानियम, ग्राम, मूर्छना तथा प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक संगीत के परिभाषिक शब्दों की पूर्ण तथा विस्तृत व्याख्या।

(२) (क) गमक तथा उनके विविध प्रकार।
(ख) भारतीय वाद्यों के विविध प्रकार-तत् अवनद्ध, घन, सुषिर।

(३) कर्नाटक तथा उत्तर भारतीय संगीत पद्धतियों का विस्तृत ज्ञान।

(४) ख्याल गायन के घरानों के इतिहास एवं उनकी विशेषताएं तथा संगीत में उनकी देन।

(५) हारमोनियम के सम्बन्ध में आलोचनात्मक विवेचन।

(६) तानपुरे से उत्पन्न सहायक नाद-
(क) हारमनी (Harmony)
(ख) मेलोडी (Medoly)
(ग) मेजरटोन (Majortone)
(घ) सेमीटोन (Semitone)
(ड़) कॉर्डस (Chord.)

(७) (क) रागों का वर्गीकरण (Classification) उनका पूर्ण इतिहास तथा महत्व एवं उनके सम्बन्ध में विचार।
(ख) पाश्चात्य (Western) स्वर लिपि का साधारण ज्ञान।

(८) भातखंडे एवं विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

(९) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के मूल नियम।

द्वितीय प्रश्न-पत्र (Second paper)

(१) निर्धारित रागों का पूर्ण परिचय एवं आलाप, तान लिखनें का अभ्यास, रागों का अविर्भाव तिरोभाव तथा अल्पत्व बहुत्व को स्पष्ट करना । लिखित स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना। प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित राग समूहों में समानता तथा विभिन्नता का ज्ञान।

(२) बडे ख्याल तथा छोटे ख्यालों की स्वरलिपि एक ध्रुपद तथा धमार की स्वरलिपियों को ठाह, दुगुन चौगुन तथा आड़ में लिखने का अभ्यास।

(३) किसी भी गीत को स्वरबद्ध तथा तालबद्ध करना एवं उनको स्वर लिपियों में लिखनें का अभ्यास होना चाहिए।
पाठयक्रम में निर्धारित ताल समूहों को विभिन्न लयकारी में लिखना।

(४) जीवनी तथा संगीत में योगदान-
फैयाज खां, डी. वी पुलुस्कर, ओंकार नाथ ठाकुर।

(६) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखने की क्षमता।

क्रियात्मक (Practical)

(१) नीचे दिये गये रागों में पूर्ण गायकी ढंग सहित छोटा ख्याल जानना आवश्यक है ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए विभिन्न प्रकारों के आलाप ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़ बियाड़ तथा कुआड़ लयकारी सहित पूर्ण ध्रुपद जानना आवश्यक है।

निर्धारित राग

श्री, बसन्त, परज, पूरिया धनाश्री, मियां मल्हार, शुद्ध कल्याण मालगुंजी, छायानट, देशी, ललित, रामकली, रागेश्री, गौड़ सारंग, गौड मल्हार।

(२) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों में से किन्ही सात रागों में बड़ा ख्याल जानना आवश्यक है। (बड़े ख्याल झुमरा, आडाचरताल एकताल तथा तिलवाड़ा में निबद्ध होना आवश्यक

Continuation of second paper:

हैं।) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये ध्रुपद सूलताल, चारताल तथा तीवरा, मत ताल, रूद्र ताल में निबद्ध होने चाहिए।

(३) इस के लिए निर्धारित रागों में से किसी भी राग में दो ध्रुपद, दो धमार, दो तराना जानना आवश्यक है। ध्रुपद तथा धमार विलंबित दुगुन, तीनगुन, चौगुन तथा आड़ लयकारी सहित । (ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये विलंबित दुगुन तीनगुन चौगुन तथा आड़ लयकारी सहित दो धमार, दो होरी दो तराना जानना आवश्यक है।

(४) केवल ख्याल गायन के परीक्षार्थियों के लिए पाठयक्रम के किसी भी राग में दो ठुमरी-

पीलू खमाज
भैरवी झिझोटी।

(५) पूर्ण गायकी के साथ एक भजन, एक टप्पा तथा एक चतुरंग जानना आवश्यक है।

(६) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित समस्त रागों में समानता-विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व तथा अविर्भाव व तिरोभाव प्रदर्शन करने का अभ्यास।

(७) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के समस्त रागों का अभ्यास।

(८) आलाप सुनकर रागों को पहचानना।

(९) (क) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित समस्त तालों के ठेके के बोल विभिन्न लयकारियों में बोलने का अभ्यास।

(ख) शिखर,ब्रह, लक्ष्मी, फरोदस्त एवं आड़ा चारताल तालों के ठेके के बोल विभिन्न लय में बोलने का अभ्यास।

(१०) तानपुरे पर गानें का अभ्यास।

टिप्पणी- पूर्व वर्षो का पाठयक्रम संयुक्त रहेगा।